Rapid Fire (करेंट अफेयर्स): 20 अक्तूबर, 2023

गोल्डन पीकॉक अवार्ड से सम्मानित REC लिमिटेड

विद्युत मंत्रालय के अधीन केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उद्यम महारत्न कंपनी REC लिमिटेड (पूर्व **ग्रामीण विद्युतीकरण निगम लिमिटेड**) को प्रभावी संकट मूल्यांकन रणनीतियों को लागू करने की प्रतिबद्धता के लिये **जोखिम प्रबंधन में गोल्डन पीकॉक पुरस्कार** प्राप्त हुआ है।

- वर्ष 1991 में **इंस्टीट्यूट ऑफ डायरेक्टर्स (IOD)**, **भारत** द्वारा स्थापित गोल्डन पीकॉक अवार्ड्स, **कॉर्पोरेट के क्षेत्र में उत्कृष्टता के** लिये अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर **प्रशंसित मानक** के रूप में उभरा है।
  - **IOD कॉर्पोरेट निदेशकों के पेशेवर विकास और प्रभावी बोर्डों** के गठन की आवश्यकता को पूरा करने के लिये **सोसायटी पंजीकरण अधिनियम XXI, 1860** के तहत भारत में निदेशकों का एक शीर्ष पेशेवर संघ है।
- REC लिमिटेड एक गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी (NBFC) है जो भारत में पावर सेक्टर फाइनेंसिंग और विकास पर केंद्रित है। यह विद्युत ऊर्जा क्षेत्र में विभिन्न संस्थाओं को वित्तीय सहायता प्रदान करती है।
  - REC की फंडिंग से भारत में हर चौथा बल्ब रोशन होता है ।

और पढ़ें... REC को महारत्न का दर्जा

लघु हिम युग आर्द्र था

1671-1942 ई. के मध्य हुई एक वैश्विक जलवायु घटना, **लघु हिम युग (LIA)** का एक नया अध्ययन, जो उस युग में **वर्षा के प्रकार** में महत्त्वपूर्ण बदलाव प्रदर्शित करता है, इस **लघु हिम युग के दौरान कम मानसूनी वर्षा के साथ समान रूप से शीतल एवं शुष्क जलवायु** की पारंपरिक धारणा को चुनौती देता है।

- अध्ययन के लिये दक्षिण-पश्चिम ग्रीष्मकालीन मानसून (SWM) **और** पूर्वोत्तर शीतकालीन मानसून (NEM) दोनों से प्रभावित पश्चिमी घाट को चुना गया था।
- वैज्ञानिकों ने भारत के पश्चिमी घाट से **पराग-आधारित विश्लेषण** का उपयोग करके 1219-1942 ई. तक की शाक-गतिकी और जलवायु परिवर्तनशीलता का विश्लेषण किया।
  - पराग विश्लेषण में **पूर्व काल सदृश वातावरण के पुनर्निर्माण के लिये पराग (बीज-पौधे में नर बीजाणु) का प्रयोग किया जाता है।**
- अध्ययन **में पश्चिमी घाट में आर्द्र LIA के रिकॉर्ड के संकेत मिले हैं,** क्योंकि **नमी की स्थिति** LIA के दौरान **बढ़ी हुई NEM** के कारण हुई थी।
  - अध्ययन क्षेत्र में मुख्य रूप से आर्द्र नम/अर्द्ध-सदाबहार और शुष्क उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन शामिल थे।
- अध्ययन से यह भी पता चलता है कि अंतर-उष्णकटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र (ITCZ) की गति, **सकारात्मक तापमान विसंगतियों,** सौर धब्बों **की संख्या में वृद्धि** और उच्च सौर गतिविधि के कारण भी जलवायु परिवर्तन हो सकता है।

और पढ़ें...पश्चिमी घाट

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/rapid-fire-current-affairs-20-october,-2023